ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 339-342
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

शिक्षा के संदर्भ में जे० कृष्णमूर्ति के विचार

उदय प्रताप सिंह

शोध अध्येता– श्री गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय (सम्बद्ध– बीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय), मालटारी, आज़मगढ़ (उ0प्र0) भारत

Received- 03.12. 2021, Revised- 06.12. 2021, Accepted - 12.12.2021 E-mail: udaipgkp@gmail.com

सारांशः विश्व के समस्त देशों के विद्वानों, दार्शनिकों एवं शिक्षा मनीषियों ने शिक्षा को 'मानव निर्माण का प्रबल साधन स्वीकार किया है। किन्तु आज शिक्षा एक ओर मानव के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, व्यावसायिक, सांस्कृतिक जैसे महत्वपूर्ण आयामों का सम्यक विकास कर वैयक्तिक विकास में अपनी भूमिका निभाती है तो दूसरी ओर मानव को सतत परिवर्तन परिस्थितियों के अनुरूप सामाजिक विकास' के लिए प्रेरित करती है तथा उसमें योगदान के लिए सक्षम बनाती है। इसलिए विद्वानों का मत है कि यदि कोई देश विकास की दौड़ में तीव्र गति से आगे बढ़ना चाहता है तो उसे सर्वप्रथम शिक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित करना चाहिए। जबकि हम दिन–प्रतिदिन भौतिकवादी जीवन में घिरते जा रहे हैं और भाव पक्ष रहित कलापक्ष का विकास करते हुए मानव की भूमिका एक मशीन के रूप में होती जा रही है।

कुंजीभूत शब्द– शिक्षा मनीषि, मानव निर्माण, वैयक्तिक विकास, भौतिकवादी, गुणवत्ता, कलापक्ष, व्यावसायिक।

मानव चेतना कैसे विकसित किया जा सके, जिससे मानव अपनी समस्त क्रियाओं को क्रियान्वयन करके जगत कल्याण में अपनी भूमिका अदा कर सके। वर्तमान शिक्षा तो मानव मन को वर्तमान व्यवस्थाओं के तन्त्र का गुलाम बनाती है। उसकी एक पुर्जा मात्र बना देती है। मनुष्य एक चेतन, जिज्ञासु, गतिशील, सृजनशील प्राणी न होकर धोबी का कुत्ता बन कर रह गया है जो एक बने बनाये तन्त्र के इर्द–गिर्द बन्धनों में जकड़ा हुआ और एक निर्धारित परिधि में चक्कर लगाता हुआ रह जा रहा है।

जे० कृष्णमूर्ति जी इस युग के महान मुक्ति साधक और उत्प्रेरक थे। वे विद्या को ही नहीं बल्कि समग्र सम्पूर्ण जीवन को मुक्ति की दिशा में ले जाने का आहवान किया है। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को सत्य शोधक, जिज्ञासु, सजग, सृजनशील एवं जीवन साधक बनने की प्रेरणा जगायी है।

स्वानुभूत एवं सत्यदर्शन की प्रक्रिया के क्षेत्र में कृष्णमूर्ति जी का महत्वपूर्ण स्थाना माना जाता है। विदेशी विश्वविद्यालयों के भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से सम्पर्क स्थापित करके वे मनुष्य की प्रवृत्तियों का पता लगाते और कहते हैं कि मनुष्य आराम तलब जिन्दगी यापन करके स्वयं को पलायनवादी दृष्टिकोण से पूरित करता है। जो मनुष्य को आपसी बैर भावना से परिपूर्ण करके अलगाववाद का द्योतक बनता जा रहा है जो हमारी शिक्षा, ज्ञान, स्मृति और अनुभव पर आधारित है। और ये तीनों चीजें हमें मुख्यरूप से कर्मचारी, पेशेवर, शिक्षक आदि ही बना सकती है। परम्परागत, जातिवाद, धर्मवाद, क्षेत्रवादी को बढ़ावा देती है और इससे पैदा होता है अलगाव, संघर्ष, अशान्ति महत्वाकांक्षा तथा कट्टरवादिता आदि हम शिक्षा ग्रहण करके नौकरी प्राप्त कर लेते हैं और एक व्यवस्थित एवं सुख–शान्ति से जीवन यापन करने लगते हैं।

जे० कृष्णमूर्ति जी ने सन् 1969 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का भ्रमण किया तथा वहाँ के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों, प्राचार्य, प्रशासक आदि से वार्ताएँ कीं। उनकी प्रथम वार्ता बाम्बे विश्वविद्यालय के शिक्षक तथा छात्रों से वार्ता की और पाया कि उनमें तकनीकी तथा बुद्धिमत्ता की क्षमताएं भी थीं। इसके साथ–साथ विदेशों में विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों का निरन्तर भ्रमण करते हुए अपने ओजस्वी एवं नवीनत प्राविधिकी ज्ञान द्वारा शिक्षा के क्षेत्रों को आलोकित एवं प्रकाशित करते रहें। उन्होंने शिक्षण संस्थाओं को आलोकित करते हुए अपना अनोखा योगदान दिया और शिक्षा के क्षेत्र में सुधार किया हम शिक्षा ग्रहण करने के बाद अच्छी नौकरी एवं व्यवसाय की खोज करके स्वयं को स्थापित करने का प्रयास करते हुए. अपने मतलब की बात करते हैं क्योंकि हम मतलबी होते जा रहे हैं। अपने स्वार्थ के लिए हम दूसरों के हितों को अनदेखा करते हुए हम जीवन यापन कर रहे हैं। हमारी चेतना शून्य होना ही हमारी विना एवं विघटन का कारण है।

दिन–प्रतिदिन हमारी मानवता मरती जा रही है और हम विनाश के कगार पर पहुँचते जा रहे हैं क्योंकि हमारी शिक्षा का स्वरूप भी कुछ ऐसा ही है जो हमें संवेदना शून्य एवं प्रजावानहीन बनाती जा रही है खोजबीन करना और सीखना मन का कार्य है जिसे शिक्षा पूरी करती है समझदारी एवं भ्रान्तिरहित, विश्वासों एवं आदर्शों पर नहीं वरन् तथ्यों पर आधारित है। मात्र सूचना या जानकारी का संग्रह करना सीखना नहीं है। सीखने का अभिप्राय है सम्प्रत्यय का विकास करना एवं समझाने की इच्छा है। शिक्षा का कार्य है मानव मन को इस तरह से प्रशिक्षित करें कि उसमें खोज करके तथा सृजनशीलता की क्षमता का विकास जिसकी जरूरत आज हमारे राष्ट्र को है, विश्व को है वह पूरी हो पुरानी जानकारियों, अनुभवों ज्ञान स्मृतियों के आधार पर हम सिर्फ एक सायें में ढाल सकें जो सुस्पष्ट समझदारी भरा एवं भ्रांतरहित हो, विश्वासों एवं आदशों पर नहीं वरन तथ्यों पर आधारित हो, जहाँ

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

विचार निष्कर्षो से आते हैं वहाँ सीखना नहीं होता मात्र सूचना या जानकारी का संग्रह करना सीखना नहीं है सीखने का अभिप्राय है निर्माणकारी प्रवृत्ति है, आज का मानव अपने के आगे डिग्री लगा लेने से कार्य अथवा तकनीकी क्षमता को मान्यता मिल जाती है किन्तु यदि हम सचमुच मानव का समग्र विकास चाहते हैं तो हमारा सम्पूर्ण दृष्टिकोण ही अलग होना चाहिए।

मनुष्य के क्षमताओं को उसकी डिग्री से नहीं अपितु उसकी कार्यकुशलता एवं गुणवत्ता पूर्ण कार्य से है। जिससे उसकी कुशलता एवं क्षमता बढ़ेगी और वह प्रज्ञावान बनेगा। जब हम प्रज्ञावान एवं चेतनायुक्त बनेंगे तो हम जीवन की सम्पूर्ण समग्रता को समझ सकेंगे। सृजनशीलता हमारी पहचान बनेगी जिससे हमारे अन्दर की प्रतिद्वन्दिता, प्रतिस्पर्धा, महत्वाकांक्षा, द्वन्द आदि का नामोनिशान नहीं रहेगा तब हमारे अन्दर का विश्व प्रेम की भावना का उदय होगा सम्पूर्ण जगत् हमारा घर है। क्योंकि हमारे देश की संस्कृति "वसुधैव कुटुम्बकम्" से प्रेरित है।

"वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को ह्रदय ग्राह्यता बनाकर सभी समस्याओं का समूल समाधान किया जा सकता है जिससे हमारी मानसिक शक्तियों का उपयोग संसार के कल्याणार्थ के रूप में किया जायेगा और 'सर्व जन सुखाय तथा सर्वजन हिताय की भावना का विकास होगा जिससे जगत का कल्याण एवं मानव प्रेम की स्थापना भी हो सकेगी एवं हमें हमारी सीमा का भी ज्ञान हो सकेगा जिससे हमारे सद्भावना तथा सम्भाव जागृत हो सकेगी और सम्पूर्ण विश्व में प्रेम के अथाह समुद्र में आनन्दित होकर स्वयं को भी कृतार्थ कर सकेंगे।

जे० कृष्णमूर्ति जी के शिक्षा से सम्बन्धित विचार हमारी समाजिकता एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली के स्वरूपों को निर्धारित करने के लिए अति महत्वपूर्ण एवं नितान्त आवश्यक है। उन्होंने शिक्षा से सम्बन्धित उपयोगी बिन्दुओं पर अपने विचारों को व्यक्त किया है। जिनके शैक्षिक योगदान एवं विचार अत्यन्त नवीन एवं उपयोगी है। जे० कृष्णमूर्ति जी के शिक्षा से सम्बन्धित विचारों को संक्षेप में मुख्यतः इस प्रकार निम्न बिन्दुओं के माध्यम से शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. शिक्षा सीखने की कला सीखाती है।
2. शिक्षा, शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों को शिक्षित करती है।
3. शिक्षा स्वतन्त्रता की वास्तविकता स्पष्ट कर व्यक्ति को स्वतन्त्र बनाती है। और सृजनशील बनाती है।
4. शिक्षा प्रज्ञावान बनाती है तथा जीवन को समग्रता से जीने की राह सुझाती है।
5. शिक्षा विश्व जन–जागरण है।
6. शिक्षा का कार्य समग्रता से जीवन जीने की कला सिखाना है।
7. शिक्षा सद्गुण लाती है और मनुष्य को गुणवान बनाती है।
8. शिक्षा सजगता एवं सृजनशीलता लाती है।
9. शिक्षा जीवन को समग्रता से जीना सीखाती है।
10. शिक्षा विश्व प्रेम तथा मानव प्रेम जागृत करती है।
11. शिक्षा परम्परावादिता एवं आदत से युक्त कर धार्मिक भावना एवं वैज्ञानिक मन का सृजन करती है।
12. शिक्षा स्वामित्व पूर्ण समाज से मानव को मुक्त करती है।
13. शिक्षा यह बताती है कि मनुष्य मुक्त कैसे हो सकता है।
14. शिक्षा का उद्देश्य डिग्री प्राप्त करना एवं नौकरी प्राप्त कर लेना तथा जिन्दगी के एक कोने में दुबक कर रह जाना नहीं शिक्षित होकर मानव कल्याण हेतु उड़ान भरना है।

जे० कृष्णमूर्ति जी ने शिक्षा के जिन उद्देश्यों की चर्चा अपनी वार्ताओं तथा विश्वविद्यालयों के भ्रमण के दौरान की है, शोधकर्ता ने उन्हें निम्नवत् प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

शिक्षा के उद्देश्य–

1. जीवन के रहस्यों को समझना ।
2. वास्तविक जीवन मूल्यों की खोज करना ।
3. विवेकपूर्ण विद्रोह की क्षमता जागृत करना ।
4. जिज्ञासा का दीप प्रज्वलित करना ।
5. वास्तविक धार्मिक जीवन का सृजन करना ।
6. ध्यान के वास्तविक स्वरूप को समझना।
7. सत्य की खोजन करना ।
8. भय का अन्त करना।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

9. समग्र मानव का निर्माण करना।
10. वास्तविक और अखण्ड जीवन का बोध करना।
11. स्वतन्त्र प्रेम एवं अच्छाई का प्रस्फुटन करना।
12. ध्यान के वास्तविक स्वरूप को समझना।
13. जीवन में ही मृत्यु का बोध कराना।
14. स्व ज्ञान में सहायता करना
15. वास्तविक चरित्र का निर्माण करना ।
16. जीवन जीने की कला सिखना ।
17. अहंकार से मुक्त होने में सहायता प्रदान करना।
18. मासूम विश्वास उत्पन्न करना ।
19. प्रभुत्ववादी प्रवृत्ति से जीवन को मुक्त करना ।
20. संस्कारबद्धता से मुक्त करना।
21. समग्र शान्ति लाने में मनुष्य की सहायता करना।
22. व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना।

जे० कृष्णमूर्ति जी ने शिक्षा का कोई कोना नहीं छोड़ा जहाँ तक उनकी अध्ययन बिन्दु का विषय है तो वे शिक्षा के सभी विषयों को समान रूप से अध्ययन किये और अपने विचार प्रस्तुत किये हैं क्योंकि वे एक महान शिक्षाविद एवं विचारक थे। उनकी शैक्षिक दृष्टि एक विहंग दृष्टि थी जिससे वे किसी विषय–वस्तु का विश्लेषण एवं व्याख्या करते थे।

जे० कृष्णमूर्ति जी ने शिक्षा के प्रत्येक शैक्षिक बिन्दुओं, शिक्षक, शिक्षार्थी, शैक्षिक वातावरण, प्रशासन, पाठ्यक्रम शिक्षण विषयों और शिक्षण विधियों का भी अध्ययन नवीनता के दृष्टिकोण से किया एवं हम एक आदर्श एवं कुशल अध्यापक कैसे बन सकते हैं, जिससे समाज का हित एवं निर्माण करे यह एक महत्वपूर्ण पहलू है जिसे कृष्णमूर्ति जी ने सर्वोत्तम ढंग से विश्लेषित किये हैं उत्तम शिक्षक का निर्माण कैसे होता है यह एक शिक्षण संस्थान को कैसे संचालित करता है तथा शैक्षिक समस्याओं का निवारण कैसे करता है उसका समाधान भी प्रस्तुत कियें हैं।

विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के भ्रमण के दौरान वे हमारा मार्गदर्शन किये एवं समय–समय पर उन्होंने शिक्षक तथा शिक्षार्थी के बीच कैसा सम्बन्ध होना चाहिए सबसे अच्छे तरीके से स्पष्ट किये हैं कि शिक्षा की प्रक्रिया में न तो कोई शिष्य है और न ही कोई गुरु है बल्कि एक ही पटल पर दोनों सीख रहे हैं तथा सत्य के अन्वेक्षण में एक–दूसरे की सहायता कर रहे हैं तथा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में लगे हैं। विद्यालय को छोड़ने के बाद डिग्री प्राप्त करके वे शिक्षार्थी ज्ञान वर्षा को उपयोगी बनाकर समस्त विश्व का कल्याण कर सकेंगे, यदि वे प्रज्ञावान एवं प्रज्ञाशील बनने का प्रयास किया है।

जे० कृष्णमूर्ति एक विचारक एवं शिक्षक थे किन्तु वे कभी अपने आपको शिक्षक नहीं माने क्योंकि अधिगम की प्रक्रिया में वे कभी किसी को गुरु नहीं माने। जबकि थियोसोफी के विद्वानों ने उन्हें विश्व गुरु की संज्ञा प्रदान की है। जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार सीखने तथा सीखाने की प्रक्रिया में शिक्षक छात्रों का मात्र मार्गदर्शक है। शिक्षक अपने छात्रों को इस प्रकार प्रशिक्षित करे कि छात्रों में ज्ञान के प्रति जिज्ञासा का अंकुरण हो तथा छात्र अपना सर्वांगीण विकास करते हुए सम्पूर्ण समाज का विकास कर सके और साथ ही मानव सेवा विश्व बन्धुत्व, दया–सहिष्णुता उनकी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य हो गुरु का कार्य केवल सूचना या ज्ञान देना नहीं अपितु वह छात्रों के सुख–दुःख, आनन्द, भय, सौन्दर्य, कुरूपता आदि से परिचित होकर छात्रों के जीवन की समग्रता को समझ सके एवं स्वतन्त्र चिन्तन कर सके तथा बिना किसी अवरोध के स्वतः एवं स्वतन्त्र विकास कर सके जिससे समाज, राष्ट्र एवं विश्व का भी कल्याण कर सके।

इस प्रकार सारांश के रूप में यह व्यक्त किया जा सकता है कि जे० कृष्णमूर्ति का शिक्षा के क्षेत्र एवं उसके स्वरूप तथा उससे सम्बन्धित विषयों को अध्ययनोपरान्त शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गये योगदान को रेखांकित किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. फ्रीडरिश ग्रोहे : पर्वत का सौन्दर्य, जे0कृष्णमूर्ति के स्मरण, फिफ्थ एडिशन इन इंग्लिश, 2006.
2. जे0 कृष्णमूर्ति : एजुकेशन एण्ड दि सिगनीफिकेन्स आफ लाइफ, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाट, वाराणसी।
3. महादेव राम विश्वकर्मा : जे0 कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन, काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
4. जे0 कृष्णमूर्ति : गरूण की उड़ान, जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाट, वाराणसी।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

5. जे0 कृष्णमूर्ति : दि फर्स्ट एण्ड लास्ट फ्रीडम, जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाट, वाराणसी।
6. जे0 कृष्णमूर्ति : ऑन सेल्फ नॉलेज, जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाट, वाराणसी।
7. जे0 कृष्णमूर्ति : लेटर्स टू दि स्कूल्स, फर्स्ट एण्ड सेकेण्ड वाल्यूम।
8. जे0 कृष्णमूर्ति : रिफ्लेक्शन्स ऑन दि सेल्फ ऑडिटेड वाय–रेमण्ड गार्टिन।
9. सीखने वाला मन : वार्ता 1969 बाम्बे विश्वविद्यालय के शिक्षक तथा छात्रों से।
10. जे0 कृष्णमूर्ति : शिक्षा संवाद, जे0 कृष्णमूर्ति फाण्उण्डेशन इण्डिया, राजघाट, वाराणसी, परिसंवाद त्रैयमासिक अकं।
11. जे0 कृष्णमूर्ति : स्कूलों का नाम भाग 1, 2, 3, जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाट, वाराणसी।
12. जे0 कृष्णमूर्ति : अन्तिम वार्ताएँ, जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाट, वाराणसी।
13. जे0 कृष्णमूर्ति : शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य, जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाट, वाराणसी।
14. वाशिंगटन वार्ताएँ : ए फलेम आफ लर्निंग, जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, राजघाट, वाराणसी।

*****